आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
डॉ.विजया वारद • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • पांडुरंग नाडकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे

भारत जोडो

कव्हर १छायाचित्र नेट से सभी छायाचित्र-सदाविजय आर्य

भारत जोडो

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -		५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	८
आंतर भारती - २	महात्मा बसवेश्वर वचन	१०
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	११
काव्य भारती - २	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	१२
विशेष आलेख - १	मित्रता जीवन में सार्थक रूप से स्थापित करें	१३
कथा भारती - १	मौत के बाद	१६
विशेष आलेख - २	इस्लाम धर्म और मानव कल्याण	२१
समाचार भारती -१	इस्लाम धर्मश्वसुर ने किया बहू का कन्यादान और मानव कल्याण	२४
चिंतन भारती - १	बादल है उड़ती नदी और नदी है बहता बादल	२५
समाचार भारती -२	भारतीय ज्ञानपीठ में त्रिदिवसीय अध्यापन कार्यशाला का शुभारंभ	२८
विशेष आलेख - ३	राष्ट्रपिता का अप्रिय पितृत्व	२९

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com

लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय... सवाल ईमानदारी का!

ईमानदारी का तेजी से घटने, इन्सानियत का नामोनिशान मिटने की दिशा में सभ्यता की यात्रा में तेजी को लेकर चिंता और संवेदना भी कहीं न कहीं बची हुई है, वही फिर चर्चा-परिचर्चा और लेखन-संवाद के रूप में सामने आ जाती है. इन संवादों और हस्तक्षेपों के असर और परिणामों को लेकर भी आज बड़ा सवाल उठता है. अखबारों के पन्नों में छपी खबरें, टी.वी. मीडिया के चैनलों के पर्दों पर बार-बार नज़र आनेवाले दृश्य, इंटरनेट के वेबजालों और सोशल मीडिया के दीवारों पर प्रविष्ट मुद्दे व संवादों पर तुरंत प्रतिक्रिया तो देखी जा सकती है, मगर आगे जाकर बात ठंडी पड़ जाती है. बड़े गंभीर मुद्दे और सवाल भी थम जाते हैं. यह समझौतावादियों का चमत्कार है या राजनीतिक सम्मोहक राज़ है, जिसकी समझ की चेतना बढ़ने के बावजूद सामान्य जनता कहीं अपनी ऊर्जा और ताकत के प्रति आत्मविश्वास खो बैठती नज़र आती है.

सवाल ईमानदारी का आज बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है. ईमानदारी के घटते परिणामस्वरूप ही दिन-ब-दिन कई अव्यवस्थाएं पैदा होती व उभरती नज़र आ रही हैं और कई नई-पुरानी संज्ञाओं से अभिहित हो रही हैं. जनतंत्रात्मक भारत में सुव्यवस्था के लिए संविधान द्वारा निर्धारित तीनों स्तंभ (विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका) भी इन प्रभावों से अछूते नहीं रह पाए हैं. यह आए दिन किसी न किसी रूप में अख़बारों के सुर्खियों में हम देखकर उस मुद्दे पर उभरनेवाले गंभीर संवालों की चर्चा करते हैं, फिर राजनीतिक सम्मोहक तंत्र दूसरा कोई ऐसा गरम मुद्दा पेश कर देता है कि पुराने तमाम गरम मुद्दे या तो ठंडे पड़ जाते हैं या विस्मृति की हवाओं में बह जाते हैं. दुर्भाग्य से चौथा आभासी स्तंभ पत्रकारिता की भूमिका व उसका प्रभाव भी आभास दिलाने तक सीमित होकर कई संदर्भों में वह भी बेईमानी की छाया से मुक्त नहीं हो पा रही है.

विगत दिनों में भारतीय प्रेस परिषद के अध्यक्ष व पूर्व न्यायाधीश मार्कंडेय काटजू के इस आरोपपूर्ण बयान से कि मद्रास उच्च न्यायालय के एक समय के अतिरिक्त न्यायाधीश के विरुद्ध खुफिया अभिकरणों की प्रतिकूल रिपोर्ट के बावजूद सर्वोच्च न्यायालय तीन पूर्व प्रधान न्यायाधीशों द्वारा तथाकथित राजनितिक दलीलों, दबावों, प्रभावी हस्तक्षेत्रों के बीच बने अनुचित समझौतों में कथित भ्रष्ट न्यायाधीश का सेवा-विस्तार और पदोन्नति हो जाने को लेकर दो दिन चिंता जतायी गयी, संसद में हंगामा हुआ, सदन की कार्रवाही स्तंभित हुई, अखबारों की सुर्खियाँ भर गईं, टी.वी. मीडिया का टीआरपी रेट बढ़ गया और उस मुद्दो को लेकर वेबजालों

में भी चर्चा बनी रही. कई विश्लेषणों के पश्चात यह भी एक सामान्य सुझाव के रूप में उभरकर सामने आया है कि न्यायाधीशों की नियुक्तियों के लिए एक स्वतंत्र राष्ट्रीय न्यायिक आयोग का गठन हो, जो राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त हो. कई और सवाल भी खड़े हो गए कि काट्जू ने यह मुद्दा, घटना के इतने साल बाद अभी क्यों उठाया ? कथित आरोपी न्यायाधीश अब जीवित नहीं रहें तो सवाल क्यों किया जाए ? आदि-आदि. कुछ तो तर्क ऐसे भी उठे और ऐसे भी सुनाई पड़ने लगे कि यह न्यायिक तंत्र पर सवाल खड़ा करना और उसमें भ्रष्टाचार के फैलने के मद्दों की खुली चर्चा से जनसाधारण की उस पर भरोसा नहीं रह जाएगा, सर्वोच्च न्यायालय व प्रधान न्यायाधीशों से संबंधित मुद्दा होने की वजह से ज्यादा संवेदनशील होने के कारण इसकी चर्चा आगे न बढ़ाई जाए आदि. इस विवादित घटना से संबद्ध माने जाने वाले तथाकथित आरोपी दलों में एक दल के नेता के काट्जू के इस समय सवाल उठाने पर आड़े हाथों लिया, दूसरा दल ने तो चुप्पी साधी है और उनके बयान बाजी प्रवक्ता ने भी यही घोषणा की है कि फिलहाल हम इस पर प्रतिक्रिया देने के अपने अधिकार को सुरक्षित रखते हैं, क्योंकि मुद्दा अतिसंवेदनशील है....अतः सबको संयम रखना चाहिए.

अति संवेदनशील मुद्दों को छेड़ना विस्फोटक पदार्थ को सक्रिय करने से बढ़कर खतरनाक होता ही है, मगर लगता है कि राजनीति के लिए दुर्भाग्य से समय-असमय यह एक प्राणवायु की भांति सामान्य जरूरत बन रहा है. इन तमाम घटनाओं, मुद्दों, संवेदनात्मक स्थितियों में यही बात उभरकर सामने आ रही है कि ईमानदारी हर तरफ़, हर कहीं घट रही है और इसके साथ संबद्ध असंबद्ध हर कोई चुप-चाप अनुचित समझौता कर बैठ जाते रहे हैं, जनसाधारण भी इसका कोई अपवाद नहीं रह गया है.

कोई व्यवस्था स्तंभित हो जाए और सामान्य स्थिति न बनी रहे, ऐसा किसी का आशय नहीं होना चाहिए, क्योंकि इसी से आशांति का बीजवपन हो जाता है. मगर यह मुद्दा जरूर चिंतनीय है कि घटती ईमानदारी के सवाल को हम गंभीरता से लें और मरती इन्सानियत को बचाये रखने की कोशिश बराबर जारी रखें, इसमें कोई बेईमानी न बरते, यही हम सबके सार्थक अस्तित्व के लिए श्रेयस्कर है.

राष्ट्रीय न्यायिक आयोग के गठन से भले ही न्यायाधिकारियों की नियुक्ति में तथाकथित राजनीतिक दख़लंदाजी कम होना संभव हो जाए, मगर न्यायाधीश के रूप में शपथलेने वाले व्यक्ति बेईमानी के शिकार हो जाए तो समाज में अतिसंवेदनशील स्थितियाँ बढ़ती जाएंगी. विभन्न नौकरी-पेशों, अधिकारिक पदों, ओहदों के कारण बेहतरीन स्थिति में जीनेवाले व्यक्तियों में जीवन की सामान्य

जरूरतें, जैसे रोटी, कपड़ा, मकान की कोई कमी नहीं होती, उनके हाथों अधिकार रहते आबरू-मर्यादाओं की भी कोई कमी नहीं रहतीं, ऐसे में उन्हें बेईमानी के साथी बनने की विडंबना कभी पैदा नहीं होनी चाहिए. मगर सभी तरह की नौकरी-पेशों, अधिकारी वर्गों में बेईमानी किसी न किसी रूप में अकारण बढ़ती जा रही है. अर्थहीन अस्तित्व की चिंताओं, भोगविलासिता की दिशा हीन सभ्यता के परतों के बीच व्यक्ति को भटकने से बचना जरूरी है. इसी भटकाव में बेईमानी आसानी से व्यक्ति से दोस्ती बनाकर वह छूटने का नाम नहीं लेती है.

आज की इन विडंबनात्मक परिस्थितियों में सुधार की गुंजाइश आज नहीं है तो कल तो बिल्कुल है. यह वही है कि हम कल के नागरिकों के दिमागों में इन बेईमानी, भ्रष्टता, अप्रामाणिकता, अमानवीयता आदि दुर्व्यवहारों के विष बीजों के बोने से बचें, इसके लिए उन्हें अच्छे संस्कारों के बीच पलने-बढ़ने का भरपूर अवसर मुहैया करा दें, स्वतंत्र और स्वच्छंद चिंतन का माहौल उनके बीच पनपने दें.

जन संख्या के सभी सर्वेक्षणों के आंकडें यही बता रहे हैं कि आगामी वर्षों में युवा वर्ग की अधिक संख्या वाले देशों की दृष्टि से भारत सर्वेच्च स्थिति में रहेगा. यह निश्चय ही दुनिया में भारत के बढ़ते प्रभाव का भी निशाना बनेगा. तथाकथित विश्व गुरू होने की भूमिका यदि हमें कायम करनी है, तो हमारे युवा वर्ग के संस्कारों में ईमानदारी के पुट को आज की तुलना में बढ़ाने की बड़ी जरूरत है. ऐसी जरूरतों की पूर्ति की दिशा में आंतर भारती' न्यास द्वारा आयोजित हो रहे बाल संस्कार शिविरों, युवा अभियानों की बड़ी प्रासंगिकता है. भविष्य में युवा वर्ग की बड़ी संख्या के बल का भरपूर फायदा उठाते हुए सर्वश्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए आइए हम ईमानदारी को बढ़ाने के कदम उठाएं और इन्सानियत को ज़िंदा रखने के लिए प्राणवायु के रूप में भूमिका निभानेवाले अभियानों को सुदृढ़ बनाकर सक्रिय रखने की भरपूर कोशिश करें. इनकी आज बड़ी प्रासंगिकता है. संवैधानिक प्रावधानों के बल को बढ़ाने के लिए जो तीन स्तंभ हैं, उनमें से बेईमानी को भगाने में युवा पीढ़ी की भूमिका महत्वपूर्ण होगी. इसके लिए उन्हें सद्संस्कारों में पलने की व्यवस्था भर हम ईमानदारी से करें, यह आज की बड़ी आवश्यकता है. स्वतंत्रता, समता और भाईचारे के बीज मंत्रों के सुपरिणाम इन तीनों स्तंभों के माध्यम से जन-जन को सदा मिलते रहे, इन पर जनता का विश्वास बना रहे, यह सुनिश्चत होना इस समूची व्यवस्था में ईमानदारी को बचाने से ही संभव है.

मैत्री दिवस व स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं सहित...

- सी. जय शंकर बाबु

तुकाम्हणे

बव्हती ते संत करितां कवित्व

नव्हती ते संत करितां कवित्व । संताचे ते आप्त नव्हती संत ।।धृ।।
येथें नाहीं वेश सरतें आडनांवें । निवडे घावडाव व्हावा अंगी ।।१।।
नव्हती ते संत धरितां भोंपळा । करितां वाकळा प्रावरण ।।२।।
नव्हती ते संत करतां कीर्तन । सांगतां पुराणें नव्हती संत ।।३।।
नव्हती ते संत वेदाच्या पठणें । कर्म आचरणें नव्हती संत ।।४।।
नव्हती संत करितां तप तीर्थाटणें । सेविलिया वन नव्हती संत।।५।।
नव्हती संत माळामुद्रांच्या भूषणें । भस्म उद्धूळणें नव्हती संत ।।६।।
तुका म्हणे नाहीं निरसला देहे । तों अवघे हे संसारिक ।।७।।

हिन्दी भावानुवाद :

'सुनो, समझ लो-संत कौन है'

लिख लेता है कविता - दोहे वह भी संत नहीं है, भाई ।
संतों का जो संबंधी है, वह भी संत नहीं है, भाई ।।१।।
वेष धरे जो संतों जैसा, वह भी संत नहीं कहलाता ।
हो जिसका उपनाम संत वह भी नहीं संत कहलाता ।
रण में जो दिखलावे वीरता, उसको शूरवीर कहते हैं ।
है जिसमें योग्यता संत की संत उसी को सब कहते हैं ।।२।।
तूंबा, कमंडल जो धारे है, वह भी संत नहीं होता है ।
पहने गूदडी राम नाम की वह भी संत नहीं होता है ।।३।।
कीर्तन-प्रवचन जो करता है, वह भी संत नहीं है, भाई ।
जो पुराण की कथा बाँचता, वह भी संत नहीं है भाई ।।४।।
वेदपाठ जो करता, घोखता, वह भी संत नहीं है भाई ।

व्रत, पारण, विधि-नियम पालता, वह भी संत नहीं कहलाता ।।५।।
तप, तीर्थाटन करने से भी कोई संत नहीं हो जाता ।
कोई वन में जा बैठे तो, वह भी संत नहीं कहलाता ।।६।।
माला, मुद्रा, तिलक लगाकर, कोई संत नहीं बन जाता ।
भस्म रमाता, भस्म उडाता, वह भी संत नहीं कहलाता ।।७।।
तुका कहे संत वह जिसमें, अहंकार का लेश नहीं है ।
(जिसने) देह-द्रव्य का मोह है छोडा, जो ना ऐसे, वे संसारी हैं ।।८।।

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्या नगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

Poets are not necessarily Saints
Navhati te santa karitaan kavitwa

They are not Saints, just because they write poetry.
Neither are they Saints, because of their proximity to Saints.
They are not Saints, because of their dress and surnames.
They need saintly qualities, just as a soldier is a soldier by his training
They do not become Saints by holding the Veena[1] in their hand.
Nor by wearing clothes made of course material.
They do not become Saints by performing as minstrels.
Lecturing on the Puranas or reading of the Vedas
Or observance of rituals does not make Saints.

They are not Saints who go on a pilgrimage or observe penance.
Living in forests, adorning oneself with beads,
Or wearing singns denoting one's cult or smearing oneself with ashes,
None of these makes one a Saint.
Says, TUKA, they are mere mortals, till such time
They get rid of their egos.

1.Veena - Musical string instrument

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

आंतर भारती - २

महात्मा बसवेश्वर वचन

- डॉ.इरेश स्वामी

मूळ कन्नड वचन :

गीतव हाडिदरेनु ? शास्त्र पुराण केळिदरेनु ?
वेद वेदांतवनोदिद रेनु ?
मनवोलिदु लिंग जंगम पूजिसलारियदवरू
यल्ल बगेय अनुभवियाद डेनु ?
भक्तियिल्लदवरनोल्ल कूडल संगम देव

हिन्दी काव्यानुवाद :

गीत गाने से क्या होता है ! शास्त्र पुराण सुनने से क्या होता है ?
`वेद वेदांत पढ़ने से क्या फायदा ?
मनःपूर्वक लिंग जंगम की पूजा करने को
सब तरह से अनुभवी हुए तो क्या ?
भक्तीभाव न होनेवाले को प्राप्त नहीं होते कूडल संगम देव

सारांश : ईश्वर भक्ति भाव रहित गीत गायन, शास्त्र पुराणादि का ज्ञान, वेद वेदांत निष्णांत व्यक्ति को प्राप्त नहीं होते ''भगवंत भुकेला भक्तिचा पाहुणा'' मराठी की यह सूक्ती प्रसिद्ध है. गोरा कुम्हार, चोरवा मेळा, जनाबाई, नामदेव, एकनाथादि भक्तों को ईश्वर प्राप्त हुए उनका पांडित्य देखकर नहीं भाव देखकर.

तात्पर्य : महात्मा बसवण्णा अपने वचन में भक्ति भाव की महिमा वर्णित कर गए हैं.

प्रा.डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापुर रस्ता, सोलापुर-४१३००४
फोन ०२१७-२३४२१९४ मो. ०९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिल मूल - संत तिरुवल्लुवर

देवनागरी लिप्यंतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद - डॉ. सी. जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)

इल्लऱवियल् (गृहस्थ-धर्म)

अध्याय ५. वाळ्क्कैत्तुणै नलम् (सहधर्मिणी के गुण)

पुहळ्पुरिंद इल्लिलोर्क्कु इल्लै इहळ्वार्मुन्
एरुपोल् पीडु नडै । (कुरल - ५९)

यश ही बल
सिंह चाल-सा नर
घर-बाहर

भावार्थ - जिस घर में कीर्ति का विकास नहीं होता, वहाँ दूसरों के समक्ष गर्व से सिंह-सा पुरुष का खड़ा होना संभव नहीं ।

मंगलम् ऍन्ब मनैमाट्चि मट्रूरू अदन्
नन्कलम् नन्मक्कट् पेरू । (कुरल - ६०)

मंगलमयी
सुसंतान दायिनी
गृहिणी होती ।

भावार्थ - गृहिणी से गृह मंगलमय होना संभव है, उसे वह सुसंतान से शोभित भी कर सकती है।

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

-टी.ई.एस. राघवन

तिरुत्तणी (तमिलनाडु)

तिरुत्तणी में प्रभु स्कंद वल्लीदार समेत ।
तथैव विराजमान है, देवयानी समेत ।।
कार्तिक, स्वामिनाथ ही, सूरपद्म-संहार ।
करके देवों को मुक्त कर, आ बसे पहार ।।
षडानन, गजानन उभय, सिव गौरी के पूत ।
दोनों भक्तों की भीति, नाशक आविर्भूत ।।
दण्डायुधपाणि इसको, कहते हैं सब लोग ।
आश्रित जन समुदाय का, निरसन करते रोग ।।
शरवनभव इसका अपर, नाम बताया जाय ।
सुब्रह्मण्य इसका अन्य, नाम कहाया जाय ।।
स्वामिशैल के नाथ हैं, 'गुह' भी इनका नाम ।
शैलनिवासी देव हैं 'षण्मुख' इनका नाम ।।
तमिल देव इसको कहें, कोई नहि अत्युक्ति ।
शैव देव इसको कहें, कोई न अतिशयोक्ति ।।
शायर ओवैयार का, पूजनीय यह देव ।
भक्त अरुणगिरिनाथ का, स्तोत्र पात्र यह देव ।।
उत्सव तो सोपान का यहाँ मनाया जाय ।
'कावडि' उत्सव भी यहाँ खूब मनाया जाय ।।
कार्तिकेय हैं शाक्तिधर, गिरि पर करते वास ।
विशाख मृडसुत है सदा, शिखि पर करते वास ।।
तीर्थस्थल है तिरुत्तणी गुह मंदिर छविमान ।
देवालयों में यह है सबसे अधिक पुरान ।।

-१, हनुमंतरायन मंदिर गली, ट्रिप्लिकेन. चेन्नै- ६०० ००७

३ अगस्त २०१४ को मित्रता दिवस के अवसर पर विशेष

मित्रता जीवन में सार्थक रूप से स्थापित करें

- ललित गर्ग

संस्कृति और इतिहास में त्योहारों की एक समृद्ध परम्परा है. किसी-न-किसी धर्म और सम्प्रदाय से जुड़कर वर्ष का हर दिन कोई-न-कोई पर्व, त्योहार या दिवस होता है. विगत दो दषक में हमने अनेक नये या आयात किये हुई पर्व एवं दिवसों को हमारी संस्कृति और जीवनशैली का हिस्सा बना लिया है. उन्हीं में एक महत्वपूर्ण दिवस है फ्रेण्डशिप दिवस, जो हर वर्ष अगस्त माह के पहले रविवार को मनाया जाता है. फ्रेण्डशिप दिवस यानी मित्रता दिवस.

मित्रता शब्द बड़ा व्यापक और मोहक है. कितना प्यारा शब्द है यह. तीन अक्षरों का एक शब्द समूचे संसार को अपने साथ समेट लेने वाला, दूसरों को, अनजान-अपरिचितों को, अपने निकट लाने वाला यह अचूक वशीकरण मंत्र है. मित्रता हमारी संस्कृति है. संपूर्ण मानवीय संबंधों का व्याख्या-सूत्र है.

वास्तव में मित्र उसे ही कहा जाता है, जिसके मन में स्नेह की रसधार हो, स्वार्थ की जगह परमार्थ की भावना हो, ऐसे मित्र संसार में बहुत दुर्लभ हैं. भर्तृहरि से पूछा गया- आप मित्र की इतनी महिमा गाते हैं तो जरा बताइए मित्र कैसा होना चाहिए? मित्र में क्या विशेषता होनी चाहिए?

भर्तृहरि ने मित्र के लक्षण बताते हुए कहा है-जो अपने मित्र को पाप कार्यों से दूर करे. पापाचरण करते हुए रोके, सोचे यदि यह पाप करेगा तो इसकी आत्मा का पतन हो जायेगा. मित्र की आत्मा का उत्थान करने की भावना से पापों में हटाकर कल्याणकारी कार्यों में लगाएं. उसके हित की चिंता करे. मित्र के अवगुणों पर पर्दा डाल दे. कहीं भी मित्र की बुराई देखें, उसे हटाने की कोशिश करें और उसके गुणों को प्रकट करें. मौका मिलते ही मित्र के गुणों की प्रशंसा, उसकी बड़ाई, यश-कीर्ति करता रहे. मित्र को आपत्ति में फंसा देखकर, मित्र पर आयी विपत्ति देखकर उसका साथ नहीं छोड़े, अपितु उसे विपत्ति से बचाने का प्रयास करे और समय पर सहायता करे, अपने प्राण हथेली पर रखकर भी मित्र के प्राणों की, मित्र की कीर्ति और मित्र के हितों की रक्षा करे उसे ही सच्चा मित्र कहा जाता है.

क्षणिक और स्वार्थों पर टिकी मित्रता वास्तव में मित्रता नहीं, केवल एक पहचान मात्र होती हैं ऐसे मित्र कभी-कभी बड़े खतरनाक भी हो जाते हैं. जिनके लिए एक विचारक ने

लिखा है- ''पहले हम कहते थे, हे प्रभु! हमें दुश्मनों से बचाना परन्तु अब कहना पड़ता है, हे परमात्मा, हमें दोस्तों से बचाना.'' दुश्मनों से भी ज्यादा खतरनाक होते हैं दोस्त. मित्रता दिवस दोस्ती को अभिशाप नहीं, वरदान बनाने का उपक्रम है.

मित्रता दिवस मनाने का मूल हार्द यही है कि दोस्ती में विचार-भेद और मत-भेद भले ही हों मगर मन-भेद नहीं होना चाहिए. क्योंकि विचार-भेद क्रांति लाता है जबकि मन-भेद विद्रोह. क्रांति निर्माण की दस्तक है, विद्रोह बरबादी का संकेत.

स्वस्थ निमित्तों की श्रृंखला में मित्रता का भाव बहुत महत्वपूर्ण है. जो व्यक्ति बिना राग-द्वेष निरपेक्ष भाव से सबके साथ मित्रता स्थापित करता है, सबके कल्याण का आकांक्षी रहता है, सबके अभ्युदय में स्वयं को देखता है उसके जीवन में विकास के नए आयाम खुलते रहते हैं.

मित्रता का भाव हमारे आत्म-विकास का सुरक्षा कवच है. आचार्य श्री तुलसी ने इसके लिए सात सूत्रों का निर्देश किया. मित्रता के लिए चाहिए-विश्वास, स्वार्थ-त्याग, अनासक्ति, सहिष्णुता, क्षमा, अभय, समन्वय. यह सत्तपदी साधना जीवन की सार्थकता एवं सफलता की पृष्ठभूमि है. विकास का दिशा-सूचक यंत्र है.

प्रश्न उभरता है, आज मनुष्य-मनुष्य के बीच मैत्री-भाव का इतना अभाव क्यों? क्यों है इतना पारस्परिक दुराव? क्यों है वैचारिक वैमनस्य? क्यों मतभेद के साथ जनमता मनभेद? ज्ञानी, विवेकी, समझदार होने के बाद भी आए दिन मनुष्य लड़ता झगड़ता है. विवादों के बीच उलझा हुआ तनावग्रस्त खड़ा रहता है. न वह विवेक की आंख से देखता है, न तटस्थता और संतुलन के साथ सुनता है, न सापेक्षता से सोचता और निर्णय लेता है. यही वजह है कि वैयक्तिक रचनात्मकता समाप्त हो रही है. पारिवारिक सहयोगिता और सहभागिता की भावनाएं टूट रही हैं. सामाजिक बिखराव सामने आ रहा है. धार्मिक आस्थाएं कमजोर पड़ने लगी हैं. आदमी स्वकृत धारणाओं को पकड़े हुए शब्दों की कैद में स्वार्थों की जंजीरों की कड़ियां गिनता रह गया है.

मित्रता के लिये निस्वार्थ एवं समर्पण भावना जरूरी है. ऐसे परिवेश और परिस्थिति में मित्रता कभी नहीं विकसित हो सकती जहां स्वार्थों की दीवारें समझ से भी ज्यादा ऊंची उठ जाएं. विश्वास संदेहों के घेरे में घुटकर रह जाए. समन्वय और समझौते के बीच अहं आकर खड़ा हो जाए, क्योंकि अहं की उपस्थिति में आग्रह की पकड़ ढ़ीली नहीं होती और बिना आग्रह टूटे सत्य तक पहुंचा नहीं जा सकता. इसलिए जरूरी है मित्र-भाव की प्रगाढ़ता से हम उन कारणों की खोज करें जो इस दिशा में बाधक तत्व हैं.

मित्रता का संबंध धागा टूटता है आपसी समझ के अभाव में. व्यक्ति के बीच जब विश्वास प्रश्नों के घेरे में आ खड़ा होता है तो मन शंकाओं के ऐसे रंग में रंग जाते हैं कि

फिर हर दिखने वाली वस्तु उसे रंगीन ही लगती है, भले चाहे वह सफेद ही क्यों न हो. औरों की कही बातों पर व्यक्ति के संदर्भ में धारणाएं बना लेना, अपने नजरिए के पेरामीटर से मापने का आग्रह करना आधा-अधूरी सचाई को पाना है.

मित्रता मानवीय रिष्तों का एक आदर्ष एवं प्रायोगिक स्वरूप है, इस रिश्ते में द्वैतभाव नहीं रहता. इसलिए वहां न अपने-पराए का भेद है, न प्रतिस्पर्धा, न छोटे-बड़े की सीमा-रेखा. न आपसी खींचातान और न 'मैं', 'तू' का विग्रह. मित्रता के साथ जिस क्षण आत्मालोचन का उपक्रम जुड़ता है, क्षमा के आदान-प्रदान का विनम्र व्यवहार होता है उसी क्षण हमारी निश्छलता, पापभीरूता, ऋजुता और जागरूकता की उपस्थिति में सारे निषेधात्मक भाव, संस्कार विराम पा लेते हैं. जो विपत्ति के समय भी स्नेह से युक्त रहता है, उसे मित्र कहा जाता है. संत तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में मित्र के विषय में बताया है-

जो अपने पर्वत समान विशाल दु:ख को तो रजकण के समान छोटा समझता है और दूसरे के छोटे से दु:ख को पर्वत समान अनुभव करता है, उसे मित्र कहा जाता है.

सुप्रसिद्ध अमेरिकी लेखक डेल कार्नेगी ने मित्र बनाने की कला पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं और वे लाखों, करोड़ों की संख्या में बिकती हैं. उसने एक पुस्तक में लिखा है-'मेरी सारी संपत्ति लेकर मुझे कोई एक सच्चा मित्र दे दो.'

अमेरिकी धन कुबेर हेनरी फोर्ड का उदाहरण देते हुए उसने लिखा है कि-उससे एक बार पत्रकारों ने पूछा-आपके पास अपार धन संपत्ति है, सभी सुख सुविधाएं मौजूद हैं इतना सब होने पर आप जीवन में किस बात की कमी महसूस करते हैं?'

हेनरी फोर्ड ने कहा-धन संपत्ति के नशे में मैं एक भी सच्चा मित्र नहीं बना सका. फ्रेंडस बहुत मिले परन्तु वह फ्रेंडशिप केवल साथ खाने-पीने, मौज, शौक की ही थी. जो सच्चे दिल से मुझे चाहे और मैं उसे चाहूं, ऐसा एक भी मित्र मुझे नहीं मिला. यह मेरे जीवन की एक बहुत बड़ी रिक्तता एवं कमी है.

संसार में अधिकतर स्वार्थी मित्र मिलते हैं. जैसे सरोवर पर हंस आते हैं, जब तक उसमें पानी रहता है पानी में किलोलें करते हैं, तैरते हैं, पानी सूखने लगा तो हंस भी सरोवर छोड़कर उड़ जाते हैं. फल वाले वृक्षों पर पक्षी चहचहाते हैं, फल खाते हैं, डालियों पर झूमते हैं और फल खत्म होते ही पक्षी वृक्ष को छोड़कर दूसरे फल वृक्ष की डाल पर जाकर बैठ जाते हैं. दुमं जहा खीण फलं व पक्खी-ऐसी स्वार्थी मतलबी मित्रों से तो यह संसार भरा पड़ा है.

रामचरित में प्रसंग आता है. जब विभीषण राम की तरफ से रावण के साथ युद्ध करने

(पृष्ठ २८ पर...)

कथा भारती - १

(मातृभूमि स्टडी सर्किल पुरस्कार-२०१२ से सम्मानित मलयालम कहानी 'आफ्टर डेथ' का हिंदी अनुवाद)

मौत के बाद

मूल मलयालम कहानीकार - सुजित कमल
हिंदी अनुवाद - डॉ. सुमित पी.वी.

गतांक से आगे :

ठीक घंटे भर में एक स्त्री और दो युवक आसमी रंग वाला यूनिफार्म पहन कर फ्लैट के अंदर आये. आवेदन पत्र लेकर सब में रूपा से हस्ताक्षर करवा लिया. रूपा के दोस्तों से पता किया कि मृत व्यक्ति को कौन-कौन सी बीमारियां थीं. उन दोनों युवकों ने मिलकर कैमरा से लाश की तस्वीरें लीं. उसके बाद नहलाने के लिए बाथरूम की तरफ ले जाते समय मदद के लिए जिजो की तरफ देखा. उनके कुछ बोलने से पहले जिजो मदद के लिए आगे बढ़ा. लाश को नहलाकर कपड़ा पहनाया और तैयार किया. उसके बाद और दो लोग लाश को लिटाने के लिए ताबूत लेकर बाथरूम में आये. लाश को ताबूत में लिटाकर ड्राइंग रूम में ले आये. बाद में आये दो लोगों में से एक ने साथ वाली स्त्री के बैग से पुरोहित के कपड़े पहनकर प्रार्थना करना शुरू किया. उस समय फ्लैट में अनजान-सा चेहरा केवल जिजो का ही था.

प्रार्थना के बाद आफ्टर डेथ सर्विस सेंटर लिखा हुआ पुष्पहार लाश के पास सर्विस सेंटर की कर्मचारी मरिया ने रखा. उसके बाद एक नवयुवक आकर फ्लैट एसोसिएशन के नाम पर पुष्पहार समर्पित कर रूपा से कुछ कह कर जल्दी में फ्लैट से बाहर चला गया.

आगे के क्रिया-कर्मों में अपने सर्विस सेंटर का उत्तरदायित्व पूर्ण सहयोग का मरिया ने वादा किया. महीने का अंतिम दिन था तो कार्यालय से और कोई नहीं आयेगा, जानने पर, मरिया और उसके लोग लाश को लेकर गिरिजा घर की ओर रवाना हुए. लिफ्ट से ग्राउंड फ्लोर की ओर निकलते समय रूपा की दोस्तों में से एक ने गाड़ी की चाबी जिजो के हाथ में दी. अस्वस्थ मन के साथ खामोशी का सहारा लेकर जिजो सर्विस सेंटर की ऐंबुलेंस के पीछे गाड़ी लेकर चल दिया.

गिरिजाघर के रास्ते में कार ट्रैफिक में फंस कर पड़ी है. कार में घनीभूत चुप्पी को ढीला करती हुई मरिया ने पूछा.

मैडम रूपा, गब्रिएल सर ऑनलाइन सोशियल संबंध वाले आदमी थे?

उस तरह कोई खास दोस्त पापा का पहले से नहीं है. सेवा निवृत्ति और मम्मी की मृत्यु

के बाद तो वे बिल्कुल अकेले थे. समय काटने के लिए मैंने ही वे टू फ्रेंड्स' सोशियल साइट पर एक खाता खोल दिया था. उसके बाद तो केवल खाने के लिए ही पापा चैट रूम छोड़ कर बाहर निकलते थे. हमेशा कंप्यूटर के सामने बैठकर टाइप करते हुए देखने पर एक दिन मैंने उनसे पूछा था तो उन्होंने कहा:

तुम्हारे ऑफिस जाने के बाद तो मैं यहां अकेला हूं, तब तो इसके अलावा करूंगा भी क्या ?

पापा कहते थे कि कभी-कभी कंप्यूटर भी जीवन्त होने लगता है. एक बात तो सच है कि तीन-चार साल तक पापा ने इसी सोशियल नेटवर्क के पसीने को ही सांस के रूप में लिया था. श्योर.

हूं... हूं' के रूप में आवाज निकालती हुई मरिया कुछ बोलने लगी तो आगे की गाड़ियां धीरे-धीरे चलने लगीं. जिजो ने कार को स्टार्ट किया. आगे की गाड़ी की ब्रेक लाइट पर ध्यान देते हुए अपनी कार आगे बढ़ाने के साथ-साथ जिजो के कान ने मरिया के शब्दों पर ध्यान दिया.

मैडम, हमें यह पता चल गया है कि सोशियल साइट पर बहुत ही सक्रिय सदस्य रहे हैं आपके पापा. इसीलिए हमारे सर्विस सेंटर की सबसे नयी व्यावसायिक सुविधा से मैं आपका परिचय कराना चाहती हूं. सोशियल साइटों में काफी अच्छे ढंग से सक्रिय लोगों के प्रोफाइलों के द्वारा विज्ञापन व्यवसाय करने की हमारी योजना है. सक्रिय प्रोफाइलों में सबसे पहले प्रोडेक्ट का परिचय दिया जाता है. वर्तमान में जो भी संपर्क उपलब्ध हैं उन्हें आप द्वारा दिये जाने वाले विवरणों के सहारे हम उसे अपडेट रखते जाएंगे. प्रोफाइल पर व्यवसाय के हिसाब से हम भुगतान भी करेंगे. इसके लिए हम चौबीसों घटे काम कर रहे हैं.

मरिया ने लैपटॉप को चालू कर अपनी कार्य-प्रणाली दिखा दी. रूपा अपने दोस्तों के साथ इस संबंध में बातचीत करती दिखने पर मरिया कैनवासिंग की भाषा में बोलने लगी.

मनुष्य एक बहुत बड़ा रिसोर्स है. जन्म के बाद की जिन्दगी को दूसरों की भलाई के लिए जिस तरह उपयोग करते हैं उसी तरह मृत्यु के बाद की जिन्दगी को भी दूसरों के हित में करने से कोई बुराई नहीं है. आप तो व्यवसाय सलाहकार हैं मैडम, तो आपसे इस संबंध में ज्यादा बताने की जरूरत भी नहीं है. अगर आप सहमत हैं तो एक घंटे के अंदर यह सेवा आपको उपलब्ध हो जाएगी. उसके लिए पहले आपने जो प्रोफाइल विवरण दिया था, उतना ही काफी है.

थोड़ी देर सोचने के बाद रूपा ने समझौते के फार्म पर हस्ताक्षर कर दिया. तब तक कार

मुर्दाघर के गेट तक पहुंच गयी थी. अंतिम संस्कार संबंधी कार्यों में निर्देश देने के लिए मरिया जल्दी में कार से उतर कर ऐंबुलेंस के पास गई. पीछे-पीछे रूपा और उसकी सहेलियां भी.

क्रिया-कर्मों की जगह से थोड़ा अलग खड़ा होकर जिजो ने वेनल को एक मेसेज किया. शाम को खाली हो क्या?

नॉ थोड़ी देर में जवाब आया.

वेनल का मेसेज इनबॉक्स से मिटाकर जिजो ने वे टु फ्रेंड्स' साइट पर लॉगिन किया. गब्रिएल नोयल को फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजने के बाद लॉग आउट किया. किसी मृत व्यक्ति को उस बारे में जानते हुए भी फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजने वाला पहला इनसान मैं हूं सोच कर उसने अपना सिर ऊंचा किया. थोड़ी सी कौतूहलता के बाद आफ्टर डेथ सर्विस सेंटर के कार्यकलापों को जानना भी उसका मकसद था.

गिरिजाघर के क्रिया-कर्मों के बाद रूपा के दोस्त लोग महीने के अंतिम दिन के ऑफिस की व्यस्तताओं के बारे में कहते हुए जाने लगे. उनमें से कुछ लोगों ने जिजो के पास आकर खुद का परिचय कराते हुए उसके द्वारा की गयी सहायताओं के लिए शुक्रिया अदा किया और ऑफिस चले गये.

रूपा के साथ आकर कार चलाने के लिए मरिया ने इशारे से जिजो से कहा. अपने ड्राइवर होने की शंका के साथ जिजो ने कार चलायी.

फ्लैट के ग्रीन सिग्नल को पार कर कार अंदर आयी. उन दोनों को फ्लैट के सामने उतार कर जिजो पार्किंग करने के लिए आगे गया. मृत्यु के बाद के क्रिया-कर्मों को किसी की सहायता के बिना करने के लिए मदद करने वाले आफ्टर डेथ सेंटर सर्विस को शुक्रिया अदा कर रूपा ने बाकी रकम चेक के रूप में मरिया को दिया. फ्लैट पहुंचकर सहानुभूति संदेश लिखने वाले लोगों का विवरण लैपटॉप में टाइप कर तैयार किया और साथ में खुद का भी दुख प्रकट कर वापस लौटने के लिए तैयार होकर जिजो ने फ्लैट के अंदर आकर गाड़ी की चाबी को रूपा के हाथ में दिया. मृत्यु एक ही स्त्री तक सीमित हो गयी है. उसने उसे किस हद तक निस्सहाय कर दिया है सोचते हुए निकल ही रहा था तभी पीछे से आवाज आयी...

हेलो, एक मिनट, जरा रुकोगे?

जिजो ने मुड़ कर रूपा को देखा. उसने अंदर के कमरे से एक लिफाफा ले आकर जिजो की तरफ बढ़ाया.

प्लीज़ टेक दिस मिस्टर...एनिवे, थैंक्यू वेरी मच फोर योर वैल्युबल हेल्प्स. सी यू. लिफाफा लेने से मना करने पर जेब में उसे रखती हुई रूपा ने उसके कंधे पर हाथ

रखकर मुस्कुराई.
लॉबी में कई लोग खड़े थे तो लिफाफा खोल कर नहीं देखा. मोबाइल में समय देखा तो पांच बज चुका था.
ग्राउंड फ्लोर में देखा तो लिफ्ट बारह्वीं मंचिल पर है. लिफ्ट के लिए इंतजार न कर लीमा को लेकर सीढ़ियां चढ़ने पर रूपा सीढ़ियों से नीचे आ रही थी.
आन्टी का आज नाइट शिफ्ट है क्या?
रूपा को देखते ही लीमा ने पूछा.
हां बेटा. देरी हुई. आन्टी जाऊं?
लीमा के बालों को सहलाकार जिजो के चेहरे पर देखे बिना रूपा सीढ़ियां उतर कर चली गयी.
चाचा, वही रूपा आन्टी हैं, मैंने सुबह कहा था न?
जिजो के हाथों को पकड़ कर वह सीढ़ियां चढ़ रही थी. जिजो ने हां' के रूप में आवाज निकाली और रूपा ने जो लिफाफा दिया था उसे खोला. हजार के नोट थे. जिजो की सांस बढ़ने लगी. जल्दबाजी में सीढ़ियां उतरकर जाने वाली रूपा की ओर गौर से थोड़ी देर देखता रहा और लीमा को लेकर फ्लैट में घुसा. फ्लैट पहुंचकर यूनिफार्म बदले बिना आईपैड पर वीडियो गेम खेल रही लीमा को फ्रिड्ज से ज्यूस देकर जिजो सोफा पर पैर लंबा कर बैठ गया. वह अस्वस्थ होकर बालों को ऊंगली से नोच रहा था तो लीमा ने पूछा.
क्या हुआ चाचा, परेशान लगे रहे हैं.
कुछ नहीं
आपका इंटरव्यू खराब था क्या?
फिर सवाल.
नहीं.
जिजो ने मोबाइल लेकर वेनल का नंबर लगाया. वह पहुंच से बाहर है. उसे लगा कि वह ऑनलाइन हो सकती है तो उसने वे टू फ्रेंड्स' साइट पर लॉगिन किया. आंखों को बंद किये बिना जिजो लैपटॉप स्क्रीन पर देखता रहा. उसका फ्रेंड रिक्वेस्ट गब्रिएल ने स्वीकार किया है. अद्यतन खबरों को भी पोस्ट किया है. जिजो अपने चैट लिस्ट की ओर देखा. उसकी पलकें विश्वासहीन होकर रह गयीं.
ही ईज़ ऑनलाइन
जिजो ने जोर से कहा.
हू ईज़ चाचा?

जिजो की इस तरह बिखरी आवाज सुनकर लीमा ने आकांक्षा से पूछा.
गब्रिएल. वह ऑनलाइन हैं लीमा.
जिजो ने कहा.
मैं किस नरक में जाकर फंसा हूं!
मरिया की आफ्टर डेथ सर्विस के बारे में सोचा. जिजो अटर-पटर कुछ बोल रहा था तो लीमा ने पास आकर लैपटॉप स्क्रीन पर देखा तो गब्रिएल ऑनलाइन हैं.
लीमा हल्की मुस्कुराहट के साथ कहने लगी.
गब्रिएल अंकल भी फामी जैसे स्वर्ग में पहुंच गये होंगे. दैट्स गुड.
फामी कौन है?
जिजो ने पूछा.
मेरी दोस्त थी. मर गयी. उसने भी कहा था वह स्वर्ग में है. हम बीच-बीच में चैट करती हैं. मुझे नये वीडियो गेम वगैरह देती है. लेकिन, ई-भुगतान करने पर ही देती है. अब तो मैं गब्रिएल अंकल से मांग सकती हूं न. तब तो पहले जैसा सब कुछ मुफ्त में मिल जाएगा. चाचा, आप भी सब कुछ गब्रिएल से मांग लेना. मम्मी हमेशा मुझे गाली देती हैं कि पापा के पूरे पैसे मैं इंटरनेट पर खर्च कर रही हूं. अब तो गाली नहीं खानी पड़ेगी.
उसने जिजो के चेहरे पर देख कर मुस्कुराते हुए नया वीडियो गेम शुरू किया.
लीमा की दुनिया में अपने आपको बहुत छोटा महसूस करने पर उसकी बैचैनी बढ़ गयी. लीमा का चेहरा देख कर उसने अपने अंदर की ओर एक बार झांका. इनसान का खून और पसीना आज मशीनों जैसा हो गया है. मन बेहद अस्वस्थ होने लगा तो जिजो ने अपनी आखों को जबरन बंद किया. तब भी जिजो के चारों ओर जीवन स्पंदित हो रहा था.

मूल मलयालम कहानीकार - सुजित कमल
इनकी कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं.
संपर्क - कोरापरंबिल, तुरवूर पोस्ट, चेर्थला, आलप्पी जिला,
केरल- ६८८ ५३२
मोबा - ०९४९५७७९७३३, ई-मेल - sujithkamal@gmail.com

हिंदी अनुवाद - डॉ. सुमित पी.वी.
ये हिंदी और मलयालम में लिखते हैं और अनुवाद करते हैं.
संपर्क - वयलायी, चुंडा पोस्ट, चेरुपुषा मार्ग, कण्णूर जिला, केरल ६७० ५११
मोबा - ०९४८९८२३५८४, ई-मेल- sumithpoduval@gmail.com

विशेष आलेख-२

रमजानईद पर विशेष

इस्लाम धर्म और मानव कल्याण

- डॉ.जगदीष गांधी

इस्लाम शब्द का अर्थ है शान्ति

इस्लाम शब्द अरबी भाषा का है. इस्लाम का अर्थ है, इताअत करना, शरण लेना, अपने-आपको ईश्वर की मर्जी पर पूरी तरह से छोड़ देना. 'इस्लाम' शब्द जिस मूल धातु से बना है, उसका अर्थ है- शान्ति. इस्लाम धर्म को मानने वाले जब एक-दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं : अस्सलामोअलेकुम जिसका अर्थ होता है- आपको शांति मिले. इस्लाम धर्म के मूल में भी सत्य, भाईचारा और करूणा की वही त्रिवेणी प्रवाहित हो रही है, जो विश्व के अन्य धर्मो के मूल में है. एक अल्लाह को मानना, सबसे भाईचारा बरतना, पसीने की कमाई खाना, सदाचार का पालन करना - यह है इस्लाम के रसूल हजरत मोहम्मद साहब का आदेश.

वही सच्चा मुसलिम है जो अल्ला की शिक्षाओं पर ईमान लाता है

इस्लाम धर्म में ऐसा माना गया है कि जो आदमी नीचे लिखी पाँच बातों पर ईमान लाता है तथा इन पर विश्वास करता है, वही मुसलिम, वही ईमानवाला है :-

(१) अल्लाह पर ईमान - यह विश्वास करना कि इस सारी सृष्टि तथा इसके जीवों को बनानेवाला परम पिता परमात्मा एक है.

(२) अल्लाह की किताबों पर ईमान - अल्लाह की ओर से नाजिल हुई आस्मानी किताबों पर ईमान लाना जरूरी है. सभी सन्देशवाहक मानव जाति के कल्याण के लिए एक पवित्र किताब दे जाते हैं. इन पवित्र पुस्तकों की ईश्वरीय शिक्षाओं को उसकी गहराई में जाकर जानना तथा उस पर चलना जरूरी है.

(३) फ़रिश्तों पर ईमान - इस्लाम में फ़रिश्तों पर ईमान लाना भी जरूरी माना गया है. ये अल्लाह के रसूलों के पास अल्लाह का संदेश लाते हैं.

(४) रसूलों पर ईमान - अल्लाह अपना संदेश मानव जाति को देने के लिए युग-युग में अपने संदेशवाहक धरती पर भेजता है. इन सन्देशवाहकों को रसूल या पैगम्बर कहा जाता है. ये ईश्वररीय सन्देश वाहक युग-युग में और अनेक देशों में अलग-अलग नामों से आते रहे हैं.

(५) आखिरत पर ईमान - हम जीवन में जो भले-बुरे काम करते हैं, उनका फल हमें एक दिन भोगना पड़ेगा. एक दिन सबका न्याय होगा. उस दिन का नाम है - आखिरत. कोई नहीं जानना कि कब हमारे जीवन का अंतिम पल है. इसलिए रोजाना सोने के पूर्व अपने कर्मो का लेखा-जोखा कर लेना चाहिए.

सारी सृष्टि को बनाने वाला अल्लाह एक ही है

मोहम्मद साहब का जन्म आज से लगभग १४०० वर्ष पूर्व मक्का में हुआ था. अल्पायु में अनाथ एवं यतीम हो जाने के कारण वे शिक्षा से वंचित रहे. केवल १२ वर्ष की आयु में वे अपने चचा के साथ व्यापार में लग गये. प्रभु की इच्छा और आज्ञा को पहचानते हुए मूर्ति पूजा छोड़कर एक ईश्वर की उपासना की बात पर तथा अल्ला की राह पर चलने के कारण मोहम्मद साहब को मक्का में अपने नाते-रिश्तेदारों, मित्रों तथा दुष्टों के भारी विरोध का सामना करना पड़ा और १३ वर्षो तक मक्का में वे मौत के साये में जिऐ. जब वे १३ वर्ष के बाद मदीने चले गये तब भी उन्हें मारने के लिए कातिलों ने मदीने तक उनका पीछा किया. मोहम्मद साहब की पवित्र आत्मा में अल्लाह (परमात्मा) के दिव्य साम्राज्य से कुरान की आयतें २३ वर्षो तक एक-एक करके नाजिल हुई. कुरान में लिखा है कि खुदा रबुलआलमीन है. आलमीन के मायने सारी सृष्टि को बनाने वाला अल्लाह एक ही है. अर्थात खुदा सारी सृष्टि को बनाने वाला है तथा इस संसार के सभी इन्सान एक खुदा के बन्दे और भाई-भाई हैं. इसलिए हमें भी मोहम्मद साहब की तरह अपनी इच्छा नहीं वरन् प्रभु की इच्छा और प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुए प्रभु का कार्य करना चाहिए. परमात्मा ने मोहम्मद साहब के द्वारा 'कुरान' के माध्यम से मानव जाति को 'भाईचारे' का सन्देश दिया है. मोहम्मद साहब ने जो उपदेश दिये वे 'हदीस' में संग्रहित हैं.

मोहम्मद साहब ने सारी मानव जाति को मिल-जुलकर रहने का संदेश दिया

पैगम्बर मोहम्मद ने उन बर्बर कबीलों के सामाजिक अन्याय के प्रति जिहाद करके समाज को उनसे मुक्त कराया. तथापि मानव जाति में भाईचारे की भावना विकसित करके आध्यात्मिक साम्राज्य स्थापित किया. मोहम्मद साहब का एक ही पैगाम था पैगामे भाईचारा. मोहम्मद साहब ने मक्का में जो लोग खुदा को नहीं मानते थे उनके लिए उन्होंने कहा कि वे खुदा के बन्दे नहीं हैं अर्थात वे काफिर हैं. इसी प्रकार जेहाद का मतलब अपने अंदर के शैतान को मारना है.

भाईचारे की राह पर चलने पर ही सारी मानव जाति की भलाई है

मोहम्मद साहब ने अनेक कष्ट उठाकर बताया कि खुदा के वास्ते एक-दूसरे के साथ दोस्ती से रहो. आपस में लड़ना खुदा की तालीम के खिलाफ है. मोहम्मद साहब की शिक्षायें किसी एक धर्म-जाति के लिए नहीं वरन् सारी मानव जाति के लिए है. मोहम्मद साहब की बात को मानकर जो भी भाईचारे की राह पर चलेगा उसका भला होगा. मोहम्मद साहब ने अपनी शिक्षाओं द्वारा विश्व बन्धुत्व का सन्देश सारी मानव जाति को दिया. अल्ला की ओर से मोहम्मद साहब पर नाजिल (अवतरित) हुई कुरान की आयतें हमें अपने अंदर की जंग जीतने का सन्देश देती है. परमात्मा की ओर से आये पवित्र ग्रन्थों की शिक्षाओं को जीवन में धारण करना ही हमारे जीवन का मकसद है. यही सच्चा

जेहाद है. मुसलमान के मायने जिसका अल्ला पर ईमान सच्चा हो. केवल रफीक, अहमद आदि नाम रख लेने से कोई मुसलमान नहीं हो जाता. मुसलमान बनने के लिए अल्ला की शिक्षाओं पर चलना जरूरी है.

सारे विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए उसे एकता की डोर से बांधना पड़ेगा

ईश्वर एक है. धर्म एक है तथा सारी मानव जाति एक है. हम सभी परमात्मा की आत्मा के पुत्र-पुत्री हैं. इस नाते से सारी मानव जाति हमारा कुटुम्ब है. विश्व के लोग अज्ञानतावश आपस में लड़ रहे हैं हमें उन्हें एकता की डोर से बाँधकर एक करना है. हमें बच्चों को बाल्यावस्था से ही यह संकल्प कराना चाहिए कि एक दिन दुनियाँ एक करूँगा, धरती स्वर्ग बनाऊँगा. विश्व शान्ति का सपना एक दिन सच करके दिखलाऊँगा. परमात्मा की ओर से अवतरित पवित्र पुस्तकों का ज्ञान सारी मानव जाति के लिए हैं. यदि बच्चे बाल्यावस्था से ही सारे अवतारों की मुख्य शिक्षाओं मर्यादा, न्याय, सम्यक ज्ञान (समता), करूणा, भाईचारा, त्याग तथा हृदय की एकता को ग्रहण कर लें तो वे टोटल क्वालिटी पर्सन बन जायेंगे. इस नयी सदी में विश्व में एकता तथा शान्ति लाने के लिए टोटल क्वालिटी पर्सन (पूर्णतया गुणात्मक व्यक्ति) की आवश्यकता है.

इस्लाम धर्म की मूल भावना मानव कल्याण है

परमात्मा की दिव्य योजना के अन्तर्गत अवतरित किसी भी सन्देशवाहक को तथा उनकी शिक्षाओं को कम करके नहीं आंकना चाहिए. परमात्मा की दृष्टि में यह संशयवृत्ति ''संशयात्मा विनश्यति'' जैसा अवगुण है. जिन अज्ञानियों ने हर युग में परमात्मा द्वारा अवतरित अपने युग के सन्देशवाहक का अपने अहंकार तथा संशयवृत्ति के कारण विरोध किया उन्होंने अपने शरीर के साथ ही साथ अपनी आत्मा का भी विनाश कर लिया. ईश्वरीय सन्देशवाहक की इच्छा और आज्ञा को पहचानने के मायने है परमात्मा की इच्छा और आज्ञा को पहचान लेना. २१वीं सदी में भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से सफल होने के लिए हमें इस युग का ज्ञान तथा इस युग की बुद्धिमत्ता चाहिए. हमारे प्रत्येक कार्य-व्यवसाय रोजाना परमात्मा की सुन्दर प्रार्थना बने. मंगलमय वह जगह जहाँ प्रभु महिमा गायी जाती. मंदिर, मस्जिद, गिरजा, गुरूद्वारे कहीं से प्रभु की पूजा, इबादत, प्रेयर तथा पाठ करो उसे सुनने वाला परमात्मा एक है. वो ''अनाम'' जिसे हम रब, खुदा, जीसस, ईश्वर व अन्य बहुत से नामों से जानते हैं.

परम पिता परमात्मा के मार्ग पर मानव कल्याण की भावना से सतत चलते हुये हमारी सदैव प्रार्थना है :-

''विद्यालय है सब धर्मो का एक ही तीरथ धाम
क्लास रूम शिक्षा का मंदिर बच्चे देव समान.''

- शिक्षाविद् एवं संस्थापक-प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

समाचार-भारती-२

श्वसुर ने किया बहू का कन्यादान

जीवनभर चोली चूडी करूंगा, अंधकारमय जीवन में प्रकाश की किरण

- श्री विनोद कापसे, यवतमाल, मांगलादेवी

(तीन एकर खेती बहू के नाम पर : पुत्र की मृत्यु के बाद बहू का जीवन उद्ध्वस्त न हो इसलिए प्रकाश घावडे ने कुछ दिन पूर्व तीन एकर खेती, 'माला' के नाम पर कर दी. माला को पिता नहीं है. प्रकाश घावडे ने शादी की पत्रिका में भी माला के नाम के आगे अपना नाम लिख कर उसे पिता न होने का दुः होने नहीं दिया. जीवन भर उसे चोली-चूडी करने का निर्णय उन्होनं लिया.)

यवतमाळ : इकलौता बेटा वंश का दिया जिंदगी के एक मोड पर अचानक बुझगया. बहू का जीवन अंधकार से भर गया. पुत्रवियोग के आकाश जितने दुःख मन में छिपा कर महाराष्ट्र के प्रगतिशील परंपरा को शोमित करनवाला निर्णय गांव के एक गृहस्थ ने लिया विधवा बहू को ही अपनी पुत्री मानकर उसका ठाठबाट से पुनर्विवाह करा दिया. जो १४ महीने पूर्व ससुर था वही गृहस्थ उसका पिता हो गया. कन्यादान करके बहू के अंधकारमय जीवन में प्रकाश का बीज बोया. नेतर तालुका के चिरवली कान्होबा निवासी प्रकाश घावडे के निर्णय से समाज के सामने एक नया प्रकाश मार्ग शुरू हुआ. श्री प्रकाश तथा चन्द्रकला घावडे को राजेंद्र नाम का इकलौता पुत्र था. चौदह महीने पूर्व उन्होंने राजेन्द्र का धुमधाम से विवाह कर दिया. सारा घर आनंद में भीग गया था. परन्तु इस सुखी संसार को नियती की नजर लग गई.

राजेन्द्र की सर्पदंश से मृत्यु हो गई. बहू माला का गृहस्था जीवन बिखर गया.

लाडली बहू के जीवन का क्या होगा ? यह चिन्ता प्रकाश घावडे को सताने लगी.

नामानुरूप प्रकार्श मार्ग पर जीवन जीनेवाले प्रकाश घावडे को किसी भी स्थिति मं बहू के जीवन में प्रकाश ज्योति लगाने का ध्यान बेचैन कर रहा था. सीने पर पत्थर रख कर उन्होने वर ढूंढना शुरू किया. पत्नी चन्द्रकला ने भी इस कठिनकाल में उनके निर्णय हो दृढता से बल दिस चांदूर रेल्वे में अमोल दत्तूजी बानाईल इस पदवीधर तरूण माला से शादी करने तैयार हो गया और २० जुलाई के दिन मांगलदेवी यहाँ के मंगलादेवी संस्थान में सैकडो ग्रामवासियों की उपस्थिति में माला ने अमोल के गले में वरमाला पहनाई. उस समय प्रकाश और चन्द्रकला की आँखों में केवल आंसुओं का सैलाब उमड हुआ था. पुत्रवियोग के दुःख तथा बहू को दिए हुए नवजीवन के आनन्द इन सुखदुःख की संमिश्र भावनाओं से प्रत्येक की आंखें उबडवाई थीं.

विनोद कापसे, मांगळा देवी
(लोकमत से साभार)

बादल है उड़ती नदी और नदी है बहता बादल

- मीनाक्षी अरोड़ा और केसर

मानसून प्रति वर्ष घटने वाली ऐसी शुभ घटना है जिसका हमारे देश व हम पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है. मानसून का आगमन अपने आप में एक उत्सव है. इसका आभास ही हमें उत्फुल्लता प्रदान करता है. हमारी कृषि भी मानसून पर ही निर्भर है. मानसून की महिमा का बखान करता महत्वपूर्ण आलेख. (कासं.)

मेघ ही वह कहार हैं, जो प्रत्येक नदी-नाला, गाड़-गधेरे और कुआं-बावड़ी सहित हर जलस्रोत को तृप्त कर सबमें पानी भरते हैं. मेघ प्रति वर्ष यह काम कश्मीर से कन्याकुमारी तक अनथक करते हैं. मेघ बहुत साहसिक कहार हैं. यह खूब भारी डोली यानी ढ़ेर सारा तरल वाष्प लेकर हजारों मील दूर से भारत की यात्रा की शुरुआत करते हैं. हमारे यहां मानसून हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से आता है. कभी-कभी मानसून जम्मू-कश्मीर की सीमाओं को पार कर पाकिस्तान होते हुए ईरान की ओर यात्रा पर चला जाता है, तो कभी पूर्वी सीमा पार कर जापान की ओर. दिल्ली तक आते-आते ये मेघ लगभग पच्चीस सौ से चार हजार किमी की यात्रा कर चुके होते हैं. बूंद, बारिश, मेघ और मानसून के इस मिले-जुले खेल का रूप है वर्षा ऋतु, प्रकृति ने धरती की सतह का दो-तिहाई समुद्र बनाया है. पानी की कोई कमी नहीं छोड़ी है. सूरज के तपने से जल के हर रूप का वाष्पीकरण होता रहता है. वाष्पित होकर दक्षिण के विशाल सागरों में विशाल आकाशी 'जलवाष्प' भंडारों का निर्माण होता रहता है.

सूरज का उत्तरायण और दक्षिणायन की दिशा लेना भारतीय मानसून के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है. मकर संक्रांति हमारे मानसून का एक क्रांतिकारी दिन है. इसी दिन सूरज की किरणें दक्षिण से उत्तर की दिशा की ओर बढ़ने लगती हैं और मैदानी इलाकों के मौसम में गर्मी आनी शुरू हो जाती है. धीरे-धीरे मार्च, अप्रैल व मई माह में सूरज की किरणें धरती की कर्क रेखा के नजदीक आती जाती हैं. यानी, धरती के उत्तरी भूभागों में तपिश और गर्मी बढ़ती जाती है. ठीक इसके उलट, धरती के दक्षिणी हिस्सों में तापमान कम होता जाता है. धरती के उत्तरी हिस्सों में हवाएं गर्म होकर वायुमंडल में बहुत ऊपर की ओर उठने लगती हैं. इससे एक खालीपन बन जाता है जिसे मौसम विभाग के लोग 'डिप्रेशन' कहते हैं. यह डिप्रेशन ही अरब की खाड़ी और हिंद महासागर से 'जलवाष्प' भंडारों को उत्तर की ओर बुलाता है.

तापमान के इस बारीक से अंतर से मानसून के किसी एक आम दिन मेघ रूपी कहार ७५०० करोड़ टन जलवाष्प भारत के मैदानों की ओर लेकर आते हैं. औसतन प्रतिदिन २५०० करोड़ टन पानी बूंद के रूप में धरती पर बरसता हैं. वार्षिक भारतीय मानसून में लगभग ४ लाख करोड़ टन पानी सागर से उठकर आसमान में उड़ते हुए भारत की धरती पर आता है. सागर की अथाह जलराशि से भाप की बूंदें बनने के क्रम को हम देख नहीं सकते, लेकिन जब सागर से विशाल जलवाष्प लेकर मेघ कहार चलते हैं, तो जलवाष्पों से बने बादलों के कई-कई रूप हमें दिखाई देने लगते हैं.

बादलों के रूप में पानी की यह विशाल राशि हर साल भारत की धरती पर बरसती है. यह व्योम-प्रवाही गंगाजल होता है. हम इसे गंगाजल कहेंगे, क्योंकि इस जल से ज्यादा शुद्ध, किसी नदी-नाले की तो बात छोड़िए, बड़ी कंपनियों का बोतलबंद पानी भी नहीं होता. वर्षा जल को कई वर्षों तक के लिए आप रख दीजिए वह खराब नहीं होगा. शुद्धता और गुणवत्ता के हर मानक पर यह सबसे उत्कृष्ट जल है. अमृतलाल बेगड़ के शब्दों में-

पानी, जब समुद्र से आता है तब बादल
और जाता है तो नदी कहलाता है.
बादल उड़ती नदी है, नदी बहता बादल है!

भारतीय कहानियों में आकाश से गंगा के आने का संदर्भ हमें मिलता है, पर हम शायद इस घटना को एक पुरानी घटना के रूप में ही याद रखने लगे हैं. जरूरत है कि हर साल आकाश से उतरने वाली 'आकाशी गंगा' को हम गहरे तक याद रखें, तन-मन से उसका स्वागत करें और भगीरथ की तरह उसको रास्ता दिखाएं.

यह कहार बारिश की विशाल जलराशि को दक्षिण से उत्तर तक यानी कन्याकुमारी से कश्मीर तक बरसाते घूमते रहते हैं. मेघों को बुलाने के लिए लोग तरह-तरह से श्रद्धावनत जतन करते रहते हैं. कहीं नई बहुएं हल चलाने का उपक्रम करती हैं. कहीं छोटे बच्चों की नंग-धडंग टोली गांव में 'मेघा सारे पानी दे, नाहीं त आपन नानी दे' गाते घूमती है, तो कहीं यज्ञ या अल्लाह की खास इबादत कर मेघों के आने की दुआ मांगी जाती है.

मेघों के पास जहां का संदेशा पहुंचा वहां ज्यादा बरस जाते हैं, तो बाज वक्त कुछ इलाकों में कम बरसते हैं या उन्हें बिसरा भी जाते हैं. यह ज्यादा-कम होने का खेल कृति का अपना ही है. इस पर कोई सवाल करना बेमानी ही होगा. पिछले वर्ष बुंदेलखंड में औसत आठ सौ मिमी. से करीब डेढ़ गुना, यानी लगभग साढ़े ग्यारह सौ मिमी. तक

बारिश हुई. कोई-कोई साल बुंदेलखंड का ऐसा भी होता है, जब पांच सौ मिमी. से कम भी बारिश होती है. जरूरी है कि कृति के इस खेल को समझें. जब ज्यादा पानी आए तो ताल-तलैयों को भर लें और जब भी कमी या अकाल का साल आ पड़े तो उससे काम चला लें.

नए विज्ञान उर्फ सिविल इंजीनियरिंग के चश्मे से देखें. अब तो बस हम इंतजार करते हैं कि आकाशगंगा का दिया हुआ पानी पठार-पहाड़ गांव-गिरांव, खेत-खलिहान से होता हुआ जब नदी में आए तब हम एक बड़े बांध में उसे रोकें और नहर बनाकर खेतों में पहुंचाएं. जब हमारे खेतों में बारिश का पानी आता है, तो उस समय क्या करना है यह अभी भी ठीक से किसी नए विज्ञान का विषय बन नहीं पाया है. 'खेत का पानी खेत में' व खेत की जरूरत पूरा होने के बाद बारिश का पानी प्यार से धरती के पेट में पहुंचाने की जरूरत है. फिलहाल तो पहले पानी बांधों में जमा होता है, फिर बड़ी नहरों, छोटी नहरों, माइनर कैनाल और कुलावों से होता हुआ जब हमारे खेतों में पहुंचता है, तो कुल बारिश का लगभग दसवां हिस्सा ही हमारे काम में आ पाता है. लेकिन यदि हम 'खेत का पानी खेत में और बाकी धरती के पेट में' वाला मंत्र अपना लेते हैं, तो बारिश के एक-तिहाई या आधे पानी तक का उपयोग कर सकते हैं.

सिंचाई, सीवेज, जल वितरण की जितनी भी पद्धतियां हैं सब में प्रमुख सोच धरती के नदी जल और भूजल के उपयोग की है. 'नदी जोड़' जैसी अव्यावहारिक योजनाएं ऐसी ही सोचों का परिणाम हैं. मध्यप्रदेश में नर्मदा का पानी शिप्रा में डालकर 'शिप्रा' को तथाकथित जीवनदान दिया गया है. शिप्रा का अर्थ होता है 'तेज बहने वाली नदी'. नर्मदा का पानी डालकर शिप्रा को बहाने की योजना कितनी सार्थक होगी? अफवाह-तंत्र के विपरीत नर्मदा का पानी शिप्रा में डालने के लिए चार बार पंप करना पड़ता है. पंपिंग मशीनों को चलाने को लिए काफी ऊर्जा की जरूरत होती है. मध्यप्रदेश सरकार के अनुसार लगभग १०८ करोड़ रुपये हर वर्ष ऊर्जा पर खर्च होगा. वैसे भी यह भी सरकार का पुराना अनुमान है. सरकार पनबिजली, परमाणु, डीजल और कोयला जलाकर कब तक यह ऊर्जा लेती रहेगी? हालांकि उस पूरे इलाके की औसत वार्षिक वर्षा लगभग ८०० मिमी है, जबकि दिल्ली की औसत वार्षिक वर्षा ७०० मिमी के आसपास ही है.

गंगा-अवतरण के लिए भगीरथ बनने पर गंगा का आशीर्वाद आज भी मिलता है. जहां भी प्यार से, श्रद्धा से आकाशी गंगा को किसी ने सहेजा, वहां आज भी एक नई गंगा प्रकट हो ही जाती हैं. जिसे भी देखना है, वह पौढ़ी गढ़वाल के ऊफरैखाल गांव में जाए. वहां अभी एक-दो दशकों के अंदर ही एक नई गंगा उद्गमित, अवतरित हुई हैं. यही मुक्ति का मार्ग भी है.

समाचार-भारती-२

आंतर भारती की ओर से
भारतीय ज्ञानपीठ में त्रिदिवसीय अध्यापन कार्यशाला का शुभारंभ

कार्यक्रम का शुभारंभ सर्वधर्म प्रार्थना से हुआ. जिसमें मुख्य अतिथि पूणे से पधारे राजेन्द्र बहालकर ने अपने उद्बोधन में अध्यापन कार्यशाला का महत्व बताते हुए कहा कि इस प्रकार की अध्यापन कार्यशाला में शिक्षकों को नवाचार तथा बालमनोवैज्ञानिक रीति से सीखवाया जाए. का स्वागत अभिनन्दन किया गया. परिचय के रूप में श्री राजेन्द्र बहालकर का पूरा समय सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में बीतता है. वे विद्यार्थी, शिक्षक तथा युवक/युवतियों की विभिन्न स्तर पर अभिनव कार्यशाला लेते रहे हैं. इसी तरह हमारे भारतीय ज्ञानपीठ के विद्यालय परिसर में प्रथम दिवस की अध्यापन कार्यशाला में विभिन्न प्रकार के शिक्षाप्रद खेलों तथा कहानियों के माध्यम से शिक्षकों में नई प्रेरणा तथा उर्जा का संचार किया.

कार्यशाला में संस्था अध्यक्ष श्री 'कृष्णमंगल सिंह कुलश्रेष्ठ' तथा संस्था उपाध्यक्ष श्रीमती 'सुशीला जैन' तथा विद्यालय के प्राचार्य श्री 'सुनील सिंह सेंगर' जी उपस्थित रहे.

श्रीमती सीमा त्रिपाठी

(पृष्ठ १५ से...)

आता है तो रावण को बहुत क्रोध आ जाता है. वह कहता है, तू मेरा भाई होकर भी शत्रु की तरफ से लड़ रहा है, तो पहले तुझे ही खत्म करूंगा. क्रोध में अंधा होकर रावण विभीषण पर शक्ति प्रहार करने लगता है, तब पीछे खड़े लक्ष्मण विभीषण के आगे आ जाते हैं- कहते हैं यह शक्ति का प्रहार मैं झेलूंगा. तुम हमारे शरणागत हो, मित्र हो, तुम पर संकट नहीं आना चाहिए. तुम्हारा संकट हम झेलेंगे और आखिर विभीषण को बचाने के लिए लक्ष्मण रावण की शक्ति प्रहार झेल लेते हैं. तो यह है मित्रता. मित्र के प्राणों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की परवाह नहीं करना.

आज रास्ते चलते मित्र बन जाते हैं, कोई होटल मित्र, क्लब मित्र, कोई बस मित्र और कोई रेल मित्र. घंटा आधी घंटा की मुलाकात होती है. दो चार गप्प-शप्प मारते हैं और दोस्ती हो जाती है. लेकिन क्या यह दोस्ती वास्तविक दोस्ती है? हमें दोस्ती के नये मूल्य-मानक गढ़ने हैं, मित्रता को जीवन में सार्थक रूप में स्थापित करना है. मित्रता प्रेम का नहीं बल्कि करुणा का पर्याय होनी चाहिए. क्योंकि प्रेम में स्वार्थ है, राग-द्वेष के संस्कार हैं जबकि करुणा परमार्थ का पर्याय बनती है.

ई-२५३, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट, २५ आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-९

विशेष आलेख-१

राष्ट्रपिता का अप्रिय पितृत्व

- न्या.चंद्रशेखर धर्माधिकारी

जिस देश को महात्मा गांधी ने ब्रिटिश उपनिवेशवाद की लम्बी दासता से मुक्ति दिलाई, उसी देश के कुछ लोगों ने आज महात्मा गांधी की 'राष्ट्रपिता' की पदवी और उसकी वैधानिकतापर प्रश्न चिह्न खड़ा करने का प्रयास किया है. यह निश्चित रूप से उपकार का बदला अपकार से देने जैसा है. महात्मा गाँधी किसी पद, यश या लालसा के सर्वथा विरोधी रहे, वह कहने की आवश्यकता नहीं है. हम उन्हें 'राष्ट्रपिता' मानें या न मानें, उनके सद्विचारों की छाप हमारे हृदय पर पर सदा अंकित रहेगी. 'राष्ट्रपिता' उन्हें किसने और कब कहा, तथा उसके औचित्य पर चर्चा करता प्रस्तुत है श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारीजी का भावपूर्ण लेख - संपादक

महात्मा गाँधी हमारे क्या लगते हैं? यह प्रश्न मेरे समक्ष एक बार पुनः खडा हो गया. महात्मा गाँधी राष्ट्रपिता नहीं थे, वह बात पुनः किसी राजनैतिक नेता ने अभी-अभी कही है. उत्तर प्रदेश में भी किसी राजनैतिक नेता ने यही कहा था. मुझे यह सुनकर कोई बहुत बुरा नहीं लगा. क्योंकि इस देश में पिता को पिता न कहने वाले अनेक पुत्र हैं. चूंकि गांधीजी को अपने पिता के विषय में अच्छा-बुरा (चाहे जैसा) बोलने का जन्मसिद्ध अधिकार होने से, कोई भी उठता है और महात्मा गांधी के विषय में चाहे जो बोलता है, तो उस पर प्रतिबन्ध लगाना कठिन है. एक दृष्टि से जो सबका पिता होता है, वह किसी भी विशिष्ट व्यक्ति का पिता नहीं होता. अतः भिन्न दृष्टि से लावारिस होता है. नगर निकाय के लिये सबके बाप की मालिकी है. परंतु सफाई करने के लिये वह किसी के भी बाप की नहीं होती. उसे नगर निकाय की सडक या सार्वजनिक वस्तु माना जाता है. ऐसा ही कुछ महात्मा गाँधी के बारे में हो रहा या होने वाला है.

महात्मा गाँधी को किसी ने भारतपिता या हिन्दुस्तानपिता नहीं कहा, राष्ट्रपिता कहा है. वह भी किसी गाँधीवादी ने या गाँधी के अनुयायी ने नहीं कहा, अपितु देश-गौरव नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा है.

मोहनदास करमचन्द गाँधी को 'महात्मा' की पदवी कविन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रदान की थी, जबकि राष्ट्रपिता का सम्बोधन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने दिया था. आजाद हिन्द फौज की योजना तैयार करते समय, उसकी भूमिका विशद करने के लिये सुभाषबाबू ने अपील के रूप में एक पत्र लिखवा था. गाँधीजी देश में

आन्दोलन शुरू करके स्वतन्त्रता प्राप्त करनाचाहते थे. उधर सुभाष बाबू राष्ट्र के बाहर आजाद हिन्द सेना के प्रबन्ध में जुटे थे और भारतीय स्वतंत्रता के लिये लड रहे थे. दोनों के मार्ग भिन्न थे, पर ध्येय एक था. इस कारण सुभाष बाबू ने ऐसे वाक्य का प्रयोग किया कि 'हमें अपने कार्य के लिये राष्ट्रपिता का आशीर्वाद चाहिये'. इस पत्र में नेताजी ने यह भी लिखवा था कि गाँधीजी ने ही देश की सामान्य जनता में स्वतन्त्रता की आकांक्षा और भावना पैदा की है. सुभाष बाबू ने जब गाँधीजी को राष्ट्रपिता कहा, तब देश के सामान्यजनों को लगा कि मानो सुभाष बाबू की जुबान से उन्हीं की भावना व्यक्त हुई है. भारत के भिन्न धर्मीय, भाषीय, प्रान्तीय या जातीय लोगों में पारस्परिकता पैदा करके परतन्त्रता के विरूद्ध और स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिये गाँधीजी ने जो आन्दोलन शुरू किया है उससे राष्ट्रीयता की 'एक राष्ट्र जनता' की आकांक्षा जागृत हुई, और अब लोग गाँधीजी को 'राष्ट्रपिता' कहने लगे. फिर भी महात्मा गाँधी राष्ट्रपिता थे या नहीं थे, यह मुद्दा गौड़ है. महात्मा गाँधी के पहले भारत एक संघ राष्ट्र था अथवा नहीं, या राष्ट्र भी था या नहीं? यही वास्तविक और मार्मिक प्रश्न है.

सर जॉन ट्रस्वी नामक प्रसिद्ध लेखक ने कहा था कि हिन्दुस्तान नाम का देश ही नहीं है, बाद में जॉन सिली नामक इतिहासकार ने लिखवा कि अफ्रीका, यूरोप की भांति भरतखण्ड या हिन्दुस्तान भौगोलिक संज्ञा है, अन्योन्य भाव इस देश के लोगों में नहीं है. भारत को राष्ट्र न माननेवाले दो प्रकार के लोग हैं. इनमें कुछ विदेशी लेखक और राजनीतिक व्यक्ति हैं. भारत एक अस्तव्यस्त, बिखरा हुआ भूभाग है, उसे इतिहास नहीं सामूहिक परम्परा या संयुक्त (सामूहिक) जीवन नहीं है, ऐसा आभास देनें में स्वार्थी हेतु था और है. उनके मत में भारत भौगोलिक संज्ञा है. हमारे देश में भी ऐसे कुछ व्यक्ति हैं, जिनके मतानुसार भारत खंडों का प्रदेश है. भारत खंड यानि अनेक खंडप्राय राष्ट्रों का समूह है. अतः प्रत्येक प्रान्त की अपनी निजी संस्कृति, परम्परा, इतिहास, प्रकृति तथा अस्मिता है. प्रत्येक प्रान्त अपने को स्वतन्त्र राष्ट्र मानता है. यही स्थिति धार्मिक क्षेत्र में है. 'जितने धर्म उतने राष्ट्र' यही स्थिति दुर्भाग्य से भाषा, जाति और प्रदेश पर लागू होती है. भारत और बांगला देश का गंगा नदी के पानी का प्रश्न दो दिन में वचनबद्ध करार तथा समझौते से हल हो गया, परन्तु कावेरी नदी के पानी का प्रश्न जो कि भारत के ही दो पडोसी प्रदेशों का है, हल नहीं हो सका. क्योंकि प्रत्येक प्रदेश अपने को ही स्वतन्त्रदेश और राष्ट्र समझता है. कावेरी नदी का पानी समुद्र में बह जाय तो चलेगा, परन्तु प्रतिस्पर्शी प्रान्त ने उपयोग किया तो नहीं चलेगा - ऐसी स्थिति

है. सभी राजनैतिक दलों के प्रादेशिक नेता अपने ही दल के अन्य प्रदेशीय नेताओं के सामने इस पानी के बंटवारे को लेकर आन्दोलन ही नहीं, युद्ध करने के लिये खडे हैं. देश और राष्ट्र की अपेक्षा प्रदेश-प्रादेशिकता अधिक महत्त्वपूर्ण लगती है. अतः जिस अर्थ में राष्ट्रीयता शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह भावना इस देश में महात्मा गाँधी के राजनीतिक क्षितिज पर उदित होने के पहले नहीं थी और उनकी हत्या के बाद तो क्षीण होती जा रही है.

देश और राष्ट्र दोनों शब्द भिन्नार्थक और भिन्नतावाचक हैं. देश भौगोलिक संज्ञा है, उसकी सीमायें हैं. नदी, पर्वत, भूप्रदेश का देश होता है. राष्ट्र केवल उस भूखंड पर बसनेवाले लोगों का, नागरिकों का होता है. देश और मातृभूमि पर प्रेम पूर्वक साथ-साथ जीने का जबतक संकल्प नहीं करते तबतक राष्ट्र का निर्माण नहीं होता. जमींदार भी जमीन पर प्रेम करता है, इस कारण उस गांव की प्रजा या जनता पर उसका प्रेम रहता ही है, ऐसी बात नहीं है. बल्कि उनका शोषण करते रहना यह उसकी जमींदारी का अधिष्ठान है. राष्ट्रीयत्व के मुख्य लक्षण-एक दूसरे के साथ रहने की तैयारी नहीं है, बल्कि इच्छा और आकांक्षा है. यह इच्छा और आकांक्षा कई बार एकतरफा ही होती है. नागालैण्ड के एक नेता ने पहले एक प्रश्न उठाया था कि भारतीय राष्ट्र नामक कोई चीज अस्तित्व में है क्या ? भारत की जनता को नागा भूमि चाहिये, परन्तु नागा लोगों के प्रति उनमें प्रेम नहीं है. सारे नागा लोग देश के बाहर चले जांय, तो उन्हें वही चाहिये, उन्हें लैंड (जमीन) चाहिये, जनता नहीं. यही स्थिति कश्मीर की है. व्हिक्टर ह्यूगो नाम के तत्त्ववेत्ता ने राष्ट्र की व्याख्या करते हुए कहा था 'जिस प्रकार मनुष्य का जीवन वही होता है जैसा उसने प्रतिदिन जीने का संकल्प किया है वैसे ही परस्पर के साथ रहने का नित्य संकल्प होगा तो उसी को राष्ट्र कहा जायेगा, महात्मा गाँधी प्रवर्तित स्वराज-आन्दोलन के पहले इस देश में सामान्य नागरिकों के मन में क्या ऐसी भावना थी? यह मूलभूत प्रश्न है. बहुत पहले आदि शंकराचार्य ने धार्मिक भावना से और उधर सुरेन्द्रनाथ चटर्जी आई.सी.एस. की परीक्षा के सम्बन्ध में अखिल भारतीय प्रवास किये थे, यात्रा की थी. परन्तु उसके पीछे की प्रेरणा और भूमिका भिन्न थी. खंडित भरतखंड भारत राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया. वह सुभाष बाबू के कथनानुसार गाँधीयुग में ही आया. परन्तु अब फिर उस राष्ट्र को खत्म करने का योजनाबद्ध कार्यक्रम शुरू है, यह पता नहीं क्या है, इसका भय तो है ही.

पूना (पुणे) में एक प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्ति के अमृत-महोत्सव के प्रसंग पर

उपस्थित धर्म-मार्तंडों ने घोषणा की कि हमने नाथूराम गोडसे की अस्थियां संभालकर सुरक्षित रखी हैं. सम्पूर्ण गोडसे कुटुम्बियों का सार्वजनिक सम्मान पूना में किया गया. क्योंकि नाथूराम गोडसे ने गाँधी हत्या का 'पुण्यकर्म' किया था. अब 'गाँधीवध' शब्द का प्रयोग किया जाता है, न कि गाँधी हत्या का. 'वध' राक्षस या दुर्जनों का होता है और वध करनेवाले देव या पुण्यात्मा होते हैं. इस तरह नाथूराम गोडसे पुण्यात्मा हुआ क्योंकि उसने गाँधी का खून किया. नाथूराम गोडसे व्यक्ति नहीं था, प्रवृत्ति थी. उसका इस पर विश्वास था कि विशिष्ट व्यक्ति की हत्या कर दी जाय तो वह तो जाता ही है, उसका विचार भी नष्ट हो जाता है. अतः जिन लोगों को वैचारिक स्तर पर लडना नहीं आता, उन्होंने ऐसे व्यक्ति की हत्या या खून करना विचार नष्ट करने का सबसे प्रभावपूर्ण तरीका मान लिया. इसी कारण शायद संसार में सर्वत्र सभी महापुरुषों का अन्त हत्या द्वारा ही हुआ. गाँधी और गाँधी के विचार को खत्म करने के लिये नाथूराम गोडसे की विचारसरणि सामने आई. यह प्रवृत्ति अभी भी जड तक पहुंचना चाहती है यानी गाँधी राष्ट्रपिता नहीं थे, यह कहनेवाले भारतीय राष्ट्र या एक राष्ट्रीयत्व की भावना का खून करके राष्ट्र को नष्ट करना चाहते हैं. ऐसी परिस्थिति को निर्माण हो गया है. किन्तु इस ओरदेश का सज्ञन वर्ग दुर्लक्ष्य कर रहा है. राष्ट्र से धर्म, भाषा और प्रदेश को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है. इसदेश का प्रत्येक टुकडा स्वयं को स्वतन्त्र राष्ट्र मानकर राष्ट्रपिता नहीं थे, इस एक वाक्य के पीछे से सारी भावनायें (दुर्भावनायें) एकत्र होना चाहती हैं और यही राष्ट्रीयता के लिये भारी खतरा है.

आचार्य विनोबा का कहना था कि गाँधीजी के बलिदान के बाद हिन्दु-मुस्लिम समस्या रहनी ही नहीं चाहिये. ऐसे बलिदान से हिन्दुस्थान के सभी धर्मों की शुद्धि या परिसमाप्ति हुए बिना कोई उपाय या गति नहीं है. दोनों में से कुछ भी एक हुआ तो भी धार्मिक कलह मिटेगी. लोकनायक जयप्रकाशजी के अनुसार, 'लगता है बापू के बलिदान से इस देश की दानवता की प्यास नहीं बुझी, शायद इसे और बलिदान चाहिये' जयप्रकाशजी के इन उद्गारों में बहुत तथ्य है, यह कहने का समय आ गया है.

भारतीय राष्ट्र को यह समझ लेना चाहिये कि बहुसंख्यक का अर्थ बहुमत नहीं है. क्योंकि मत परिवर्तन और हृदय परिवर्तन होना सम्भव है, यही लोकशाही का प्राण है और संसदीय लोकतन्त्र मतों पर आधारित होता है, संख्या पर नहीं. सभी कंधों पर मात्र एक ओर वही सिर सम्भव नहीं है. जितने कंधे उतने ही सिर होंगे औरजिस-जिस के पास सिर और दिमाग है उसे भिन्न मत का अधिकार है. भिन्न

मताधिकार का आदर ही लोकतन्त्र है. परन्तु जाति, धर्म, पुनर्जन्म की कल्पना या परलोक की कल्पना तो हमारे रग-रग में व्याप्त है, रक्त में घुल मिल गयी है, आचरण में उतर गयी है. इस कारण लोकतन्त्र के मूल्य जीवन में नहीं उतरे है. उम्मीदवारी लोकतन्त्र नहीं है. उम्मीदवार आवश्यक नहीं चरित्रवान प्रतिनिधि हो, जिसमें सत्ता की अभिलाषा न हो, जिसका फण्ड और गुण्डाशक्ति पर विश्वास न हो, जो पार्टीनिष्ठ, नेतानिष्ठ, दलनिष्ठ, की अपेक्षा लोकनिष्ठ अधिक हो. आज सारी पार्टियाँ औरनेता अपनी ताकत बढाना चाहते हैं. ऐसा किसी को नहीं लगता कि जनता की शक्ति बढा जाय. आज तो नेता और सत्ताधारी जनता से संरक्षण चाहते हैं. अब तो रक्षक ही भक्षक हो रहे हैं. महात्मा गाँधी ने तो हत्या का प्रयत्न जानते हुए भी सुरक्षा लेने से इनकार कर दिया था. क्योंकि जो लोंगों द्वारा संरक्षण चाहता है उसे परलोक में ही जानाचाहिए. गाँधीजी की भांति जनता में समरस होने वाले लोकनेता को ऐसा संरक्षण जनद्रोह ही लगता है. मनुष्य की स्वभावगत अच्छाई और मनुष्यता पर विश्वास ही सच्ची आस्तिकता है और यही अहिंसा की शक्ति है. मन में और जन-मानस में आदर की भावना ही सुरक्षा का कवच है. लोगों को मारने की कला में या शस्त्राभ्यास में प्रगति करके किसी की भी सुरक्षा करना संभव नहीं है, यह समझ लेना जरूरी है. क्योंकि ऐसी हिंसक शक्तियाँ तेजी से बढ सकती हैं, औरअधिक बढ सकती है. पर हिंसासे हिंसा ही उत्पन्न होती है. पश्चिमी राष्ट्रों को शस्त्रों की शक्ति की मर्यादा ध्यान में आ गई है. उसपर से विश्वास भी उठता जा रहा है. अब उन्हे प्रकर्ष रूप में गाँधीजी के मूल्यों का भान होने लगा है. हमारे देश में पैसा, जाति, पंथ, धर्म, सम्प्रदाय आदि को विरोधी दल या पक्ष को पस्त या कमजोर करने का मार्ग मान लिया गया है. ये भी दृष्टि से प्रतिविरोधी पक्ष को खत्म करनेवाले हथियार ही है. इनका ढाल और तलवार की तरह दोहरा उपयोग होता है. इसीसे मौजमस्ती अय्याशी और व्यसन बढते हैं. हमे अन्य किसी के सगे, देश के, समाज के, परिवार के कुछ नहीं लगते यह वृत्ति भी बढ रही है. अतएव हिंसा के वैयक्तिक और सामाजिक कारण खोजकर उनके निराकरण का कार्यक्रम और योजना तैयार करना जरूरी है, जो सर्वजनीन और व्यापक होनी चाहिए और जीवन के सभी अंगों को स्पर्श करनेवाली हो. अतः सभी क्षेत्रों में हिंसा खत्म करके सक्रिय तथा सकारात्मक अहिंसा पर विश्वास जागृत करना ही महात्मा गाँधी के प्रति हमारी सच्ची आदरांजलि होगी.

संदर्भ -

१. खोज गाँधी की, गांधी विचार परिषद, वर्धा, २००८ पृ. ७२-७७

बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं मुक्त अभिव्यक्ति
कला, कौशल-विकास व राष्ट्रीय एकात्मता के लिए

अतुल एवं राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित

आंतर भारती आंतर्राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव, अतुल (गुजरात)

में

दि. १३ नवम्बर से १७ नवम्बर २०१४

८ वर्ष से १२ वर्ष की आयु मर्यादा

१५ अगस्त १४ तक पंजीकरण करें

परिवार निवास

''जो बच्चों का करेगा मनोरंजन, जुडेंगे उसके नाते प्रभु से''

- साने गुरुजी

गुजरात के **बलसाड** जिले में ग्राम **अतुल** में
अतुल न्यास के अत्यंत रमणीय व सुनियोजित
परिसर में स्थित 'अतुल विद्यालय' में आयोजित

बाल महोत्सव

संपर्क

डॉ.एस.एन.सुब्बराव
निदेशक, राष्ट्रीय युवा योजना
२२१, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - ११०००१,
दूरध्वनि - ०११२३२२२३२९
भ्रमण ध्वनि - ०९८१०३५०४०४
ई-मेल - nypindia@gmail.com

ले.क.ए.शेखर
प्राचार्य, अतुल विद्यालय,
अतुल ३९६०२० (गुजरात)
दूरध्वनि - ०२६३२-२३३७१७
भ्रमण ध्वनि - ०९८२४२५५४८०
ई-मेल al_sekaras@yahoo.com